आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-11-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ाकर मनुष्य से देवता बनाने वाले, बेहद के टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - यह पढ़ाई जो बाप पढ़ाते हैं, इसमें अथाह कमाई है, इसलिए पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ते रहो, बाप से तुम्हारी लिंक कभी न टूटे.

मनुष्यों ने लिखी गीता में एक श्लोक है - निश्चय बुद्धि विजयंति, संशय बुद्धि विनश्यन्ति. इसका मतलब है जिस आत्मा को परमात्मा पर पुरा निश्चय है उसकी सदा विजय होती है और जिसको परमात्मा पर निश्चय नहीं लेकिन अपनी शक्तिओं का अहंकार है उसका विनाश होता हैं. यही बात को बाबा ने आज मुरली में हमें सही अर्थ में समझाया है. यह तो आज सारा भारत जानता है कि ब्रह्माकुमारीस कहती है कि भगवान शिव का अवतरण हुआ है लेकिन यह बात को जानने के बाद भी उसे मानने और उसके ज्ञान को श्रीमत् समझकर चलने वाले बहुत ही थोड़े है और उसमें भी ऐक्यूरेंट फालो करने में भी नम्बरवार है. मनुष्य किसी भी बात को सुनकर उसको मानता तब है जब उसे अनुभव हो और अपने अनुभव और समझ के आधार पर ही वह बात में उसका निश्चय बैठता है. अपने निश्चय के आधार से वह बात को फालो करता है.

बाबा ने समझाया है कि हम ब्राह्मणों को नीचे बताई ६ (six) बातों में पक्का निश्चय होना चाहिए तब ही वह ब्राह्मण आत्मा इसमें निर्विघ्न होकर चल सकेगी.

१. बाप में पुरा निश्चय - इसके लिए आत्मा को परमात्मा कौन है, कहा रहता है, कैसा है यह बातों का पुरा ज्ञान और अनुभव होना जरूरी है.
२. बाप के ज्ञान में निश्चय - इसके लिए आत्मा को समझना है कि यह जो ज्ञान दे रहे है वह परमात्मा के सिवाय और कोई हो सकता है? अगर ज्ञान को सुनने के बाद इस बात पर कोई भी आत्मा विचार-सागर-मंथन करेगी तो उसका सही जवाब उसे स्वतः ही मिल जायेगा.
३. बाप की श्रीमत् में निश्चय - बाबा ने हमें हर कदम के लिए श्रीमत् दी हुई है लेकिन उसमें मुख्य है - मनमनाभव (हे मनुष्य - खुद को आत्मा समझ, मुझ परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जायेंगे), पवित्र ब्राह्मण जीवन और मन-बुद्धि से

सम्पूर्ण वैराग्यता. कोई भी मनुष्य आत्मा एक सेकेण्ड के लिए सोचे कि ऐसी श्रीमत् और कोई मनुष्य दे सकता है? अगर यह बात पर जो आत्मा विचार-सागर-मंथन करेगी वह बाप की कही श्रीमत् को सदा ऐक्यूरेंट फालो करेगी.

४. बाप ने कहे सृष्टि चक्र के ड्रामा में निश्चय - बाबा ने बताया है कि यह मनुष्य सृष्टि चक्र का ड्रामा (खेल) ५ हजार वर्ष का ही है. इसको समझने के लिए बाबा ने मुरलीओं द्वारा सृष्टि चक्र के ड्रामा पर कही गई सब बातों को हमें समझना जरूरी है. इसको ही समझने के लिए हर ब्राह्मण आत्मा को मुरली कभी भी मिस नहीं करनी हैं. क्योंकि इसे ही हमारी बुद्धि में रहा शास्त्रों का ज्ञान (कलियुग ४० हजार वर्ष का और सतयुग लाखों वर्ष का) वा फिर इस एक-दो जन्मो में मिला विज्ञान का नॉलेज जो कहता है मनुष्य पहले बंदर था वह सब उड़ जायेगा. इस बात को भी समझना है कि बाबा का सत्य ज्ञान हमें इस एक ब्राह्मण जीवन में, संगम पर ही मिलता है जब कि माया का असत्य नॉलेज हमने लास्ट ६३ जन्मो से हमारी बुद्धि में भरा है इसलिए उसको निकालने में देरी जरूर लगती है. यही कारण है बाबा हमें कहते है मुरली कभी मिस नहीं करनी हैं.

५. बाप के ईश्वरीय परिवार में निश्चय - इसके लिए आत्मा को कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान और ड्रामा का ज्ञान पक्का होना चाहिए. अभी आज की मुरली में ही बाबा ने आत्माओं का ड्रामा में पार्ट पर समझाते हुए कहा कि हर आत्मा इस ड्रामा में अपना-अपना पार्ट बजाती है और कल्प पहले उसने जो पार्ट बजाया वही फिर से रिपिट करती है. यह बात मुझे सिखलाती है कि किसी का पार्ट देख मुझे अपनी स्थिति चलायमान नहीं करनी है. मुझे अचल-अड़ोल, निर्विघ्न होकर चलना है.

६. स्व (खुद) में भी पुरा निश्चय - इसके लिए ही आत्मा को परमात्मा-बाप से योग लगाकर खुद में बल भरना है. बाबा ने आज भी मुरली में कहा कि तुम्हारी आत्मा की बैटरी डिस्चार्ज हो गई है इसको बाप के साथ योग लगाकर चार्ज करो. परमात्मा-बाप से मिले स्वमानो को आत्मा में धारण करना है.

ऐसी पक्की निश्चय बुद्धि आत्मा ही एक बाप का सहारा लेकर अन्त में विजय को प्राप्त करती है और विष्णु की विजय माला में आती हैं.

ॐ शांति. Any questions, please feel free to email Atma bhai on a.brahmin.soul@gmail.com .